Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

2SA

2 शमूएल 1:1–6:23, 2 शमूएल 7:1–10:19, 2 शमूएल 11:1–14:33, 2 शमूएल 15:1–20:26, 2 शमूएल 21:1–24:25

2 शमूएल 1:1–6:23

दाऊद ने शाऊल के मरने के तुरन्त बाद राजा के रूप में शासन करना आरम्भ नहीं किया था। सबसे पहले, उसने शाऊल और योनातान के लिए शोक मनाया। उसने उस अमालेकी को मार डाला जिसने शाऊल को मारने का घमंड किया था। दाऊद पलिश्ती नगर से यहूदा प्रान्त को वापस चला गया जहाँ वह रहता था। दाऊद के साथ उन वर्षों के दौरान कई सैनिक रहे थे जब वह शाऊल से दूर भाग गया था। उन्होंने उस सेना के विरुद्ध कई वर्षों तक युद्ध लड़ा जो अभी भी शाऊल की पारिवारिक रेखा का समर्थन करती थी। उस सेना का नेतृत्व अब्नेर नाम का एक सेनापति करता था। उस युद्ध ने कड़वी भावनाओं को जन्म दिया। योआब ने अब्नेर को मार डाला,भले ही ने राजा के रूप में दाऊद का समर्थन करना शुरू कर दिया था। तब दो सैनिकों ने, जो शाऊल के प्रति विश्वासयोग्य थे, शाऊल के पुत्र ईशबोशेत की हत्या कर दी। दाऊद ने स्पष्ट किया कि वह इन मृत्यु का दोषी नहीं है। इस्राएल के शेष 12 गोत्र ने दाऊद को अपने राजा के रूप में मान्यता दी। उन्होंने उसके साथ एक वाचा बाँधी और उसका अभिषेक किया। इस समय तक दाऊद की कई पत्नियाँ और बच्चे थे। बाद में उसके पास और भी अधिक पत्नियाँ और बच्चे थे। उस समय राजाओं के लिए यह बहुत सामान्य बात थी। परन्तु यह इस्राएल के राजाओं के लिए परमेश्वर के नियमों के विरूद्ध था (व्यवस्थाविवरण 17:14–20)। इसने दाऊद के परिवार के लिए कई समस्याओं को जन्म दिया। दाऊद ने यरूशलेम को इस्राएल के शासन की राजधानी बनाने का चुनाव किया। फिर उसने इसे आराधना का मुख्य केंद्र बनाया। उसने वाचा का सन्दूक यरूशलेम में लाकर ऐसा किया। पहली बार जब इस्राएली लोग सन्दूक को उठाकर ले गए, तो परमेश्वर ने उज्जा को सन्दूक को छूने के लिए मार डाला। इस बात से दाऊद क्रोधित हो गया। उज्जा की मृत्यु ने परमेश्वर के लोगों को स्मरण दिलाया कि वाचा का सन्दूक कितना पवित्र है। उन्हें इसका सम्मान करना था क्योंकि यह पृथ्वी पर परमेश्वर का सिंहासन था। दूसरी बार जब इस्राएली लोग सन्दूक को उठाकर ले गए, तो दाऊद ने उत्सव मनाया और सन्दूक के सामने नृत्य किया। दाऊद की पत्नी मीकल इस बात से प्रसन्न नहीं थी। उसने नहीं सोचा था कि राजा को उन लोगों के सामने नृत्य करना चाहिए जिन पर उसने शासन करता था। उसने सोचा कि यह उस पर लज्जा की बात है। लेकिन दाऊद अपने पूरे हृदय से परमेश्वर का सम्मान करने के लिए मूर्ख दिखने को तैयार था।

2 शमूएल 7:1–10:19

दाऊद वाचा के सन्दूक के लिए एक भवन बनाना चाहता था। सन्दूक को पवित्र तम्बू में रखा गया था। जब से इस्राएली मिस्र से निकले थे, यह तम्बू उनके साथ एक जगह से दूसरी जगह जाता रहा। सन्दूक पृथ्वी पर परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक था। सन्दूक के माध्यम से, परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे। उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि वे विश्वास कर सकें कि वह उनके साथ हैं। परमेश्वर नहीं चाहते थे कि दाऊद उनके लिए निवास बनाए। इसके बजाय, परमेश्वर ने दाऊद के लिए एक राजघराने का निर्माण करने का वादा किया। यह इस बात का संकेत था कि दाऊद के कुल के वंश इस्राएल के शासक होंगे। उनके बाद उत्पन्न होने वाले पुत्र इस्राएल के राजा होंगे। दाऊद के पुत्रों में से एक परमेश्वर का भवन बनाएगा। वह भवन परमेश्वर का मंदिर था। परमेश्वर ने वादा किया कि वह दाऊद के वंश के राजाओं के लिए पिता के समान होंगे। इसका मतलब था कि दाऊद के वंश से हमेशा कोई न कोई राजा के रूप में शासन करेगा। कई साल बाद, लोगों ने समझा कि यह यीशु के बारे में भविष्यवाणी थी। दाऊद परमेश्वर के वादों से आश्चर्यचकित थे। उन्होंने जाना कि ये वायदे एक वाचा के रूप मे हैं। दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा सदैव बनी रहेगी। दाऊद का हृदय धन्यवाद से भरा गया। उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर वही करेंगे जो उन्होंने कहा था। परमेश्वर ने दाऊद और इस्राएलियों को शांति और विश्राम देने का भी वादा किया। यह तब हुआ जब दाऊद ने इस्राएलियों के आसपास के लोगों के पर विजय प्राप्त की। इस्राएली अंततः उस सारी भूमि में बस गए जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को देने का वादा किया था। दाऊद ने जो उचित और सही था वही किया और इस्राएलियों का एक विश्वासयोग्य चरवाहे के रूप में अगुवाई किया। इसका एक उदाहरण यह है कि उन्होंने योनातन के पुत्र मपीबोशेत के साथ कैसा व्यवहार किया। उन्होंने सुनिश्चित किया कि मपीबोशेत को वह सारी भूमि मिले जो शाऊल की थी। उन्होंने सुनिश्चित किया कि मपीबोशेत की जरूरते हमेशा पूरी हों। इस प्रकार दाऊद

योनातन के साथ अपनी मित्रता की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य थे (1 शमूएल 23:16–18)।

2 शमूएल 11:1–14:33

इन अध्यायों में दाऊद ने दस आज्ञाओं में से तीन का उल्लंघन किया। वह अपने पड़ोसी की पत्नी बतशेबा को चाहता था। उसने उसके साथ व्यभिचार किया। फिर उसने उसके पति उरिय्याह को मरवाकर हत्या किया। मूसा की व्यवस्था के अनुसार, दाऊद को इन के लिए मृत्यु की सजा मिलनी चाहिए थी। शुरुआत में दाऊद को अपनी गलती पर कोई पछतावा नहीं था। फिर उसने नातान द्वारा बताई गई एक अमीर और गरीब आदमी की कहानी सुनी। इस कहानी से दाऊद को समझ में आया कि उसने कितना बड़ा पाप किया था। नातान ने दाऊद को उसके बुरे कामों के लिए मिलने वाले दंड के बारे में बताया। दाऊद और बतशेबा से पैदा हुआ पुत्र मर जाएगा। और दाऊद के परिवार में भयानक संकट होगा। दाऊद के सबसे बड़े बेटे अम्नोन ने अपनी बहन तामार को भ्रष्ट करके परिवार मे समस्या का कारण बना। दाऊद ने अम्नोन को सज़ा देने या तामार को न्याय दिलाने के लिए कुछ नहीं किया। फिर दाऊद के बेटे अबशालोम ने अम्नोन को मारकर मुसीबत बड़ा दी। दाऊद को इस बात का बहुत दुख था। वह कई वर्षों तक अबशालोम से दूर रहा और अबशालोम को दंड देने के लिए कोई कदम नहीं उठाया।

2 शमूएल 15:1–20:26

अबशालोम ने दाऊद के घराने में लगातार संकट पैदा किया। उसने परमेश्वर द्वारा दाऊद को राजा चुने जाने का सम्मान नहीं किया। अबशालोम दाऊद के जीवित रहते हुए खुद को राजा बनाना चाहता था। उसे न तो परमेश्वर ने चुना था और न ही किसी भविष्यवक्ता ने राजा होने के लिए अभिषिक्त किया था। लेकिन उसने बहुत से इस्राएलियों को अपने साथ आने के लिए मना लिया। उसने अपने पिता को मारने की योजना बनाई और दाऊद की रखैलों के साथ व्यभिचार किया। यह दिखाने का एक तरीका था कि उसके पास यरूशलेम में दाऊद की तुलना में अधिक अधिकार था। व्यभिचार और हत्या करने के लिए डेविड के खिलाफ नाथन की भविष्यवाणी का एक हिस्सा भी पूरा किया। दाऊद जब अबशालोम से भाग रहा था, तो उसने बहुत सोच-समझकर योजनाएँ बनाईं। उसे उन लोगों से मदद मिली जो उसके प्रति वफादार बने रहे। दाऊद ने मदद के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। दाऊद नहीं चाहता था कि उन लोगों को सज़ा दी जाए जिन्होंने उसके खिलाफ बातें की थीं। इसके बजाय, उसने परमेश्वर पर भरोसा किया कि वह उसे वाचा के आशीष प्रदान करेगा। हालाँकि अबशालोम दाऊद का दुश्मन बन चुका था, दाऊद ने अबशालोम की मौत पर खुशी नहीं मनाई । इसके बाद, दाऊद यरूशलेम लौट आया और राजा के रूप में शासन करना जारी रखा।

2 शमूएल 21:1–24:25

दाऊद का परमेश्वर की स्तुति का गीत भजन संहिता 18 में भी दिया गया है। इस गीत में उन समयों का वर्णन किया गया है जब दाऊद ने अपनी रक्षा के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया था। दाऊद समझ गया था कि उन्हे उसके दुश्मनों से बचाया गया था क्योंकि परमेश्वर उनका उद्धारकर्ता था। दाऊद को मालूम हुआ कि वह परमेश्वर ही था जिसने उन्हे अधिकार और सफलता दी थी। परमेश्वर ने दाऊद की सहायता करने के लिए उनके जीवन में कई लोगों का उपयोग किया। उनमें से एक महिला उन पुरुषों की माँ थी जिन्हें दाऊद ने गिबोनियों को मारने की अनुमति दी थी। ये गिबोनी हिब्बी थे जिन्हें इस्राएल ने नष्ट न करने का वादा किया था। दाऊद ने सुना कि इनकी माता ने उन लोगों के शवों का किस प्रकार सम्मान किया। इसलिए उसने उन्हें शाऊल और योनातान के साथ उचित तरीके से दफनाया। फिर परमेश्वर ने भूमि को फिर से भोजन उत्पन्न करने की अनुमति दी। अन्य लोग जिन्होंने दाऊद की मदद की, वे उनके अधिकारी और शक्तिशाली योद्धा थे। उन्होंने दाऊद की रक्षा की और उनका समर्थन करने के लिए अपने जीवन को संकट में डाला। दाऊद के स्तुति गीत यह भी वर्णन करते है कि दाऊद परमेश्वर से कितना प्रेम करता था। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके और परमेश्वर के मार्गों मे चलकर दिखाया। दाऊद के आखिरी शब्दों की कविता में भी इस बारे में बात की गई है। दाऊद ने बताया कि कैसे उन्होंने अपने अधिकार का उपयोग लोगों के लिए सही काम करने के लिए किया। लेकिन यह बात दाऊद के बारे में हमेशा सच नहीं थी। जब दाऊद ने सही और न्यायपूर्ण काम नहीं किया, तो इससे दूसरों को कष्ट हुआ। ऊरिय्याह, अम्नोन और अबशालोम की कहानियाँ इनकी उदाहरण थीं। उन्होंने दिखाया कि दाऊद के निर्णयों के कारण दाऊद के परिवार और इस्राएल राष्ट्र को कष्ट हुआ। एक और उदाहरण इस्राएल की भूमि में शूरवीरों की गिनती करना था। यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि यह गलत क्यों था। लेकिन दाऊद के अधिकारियों को पता था कि यह गलत था और दाऊद को एहसास हुआ कि उसने पाप किया है। इससे एक महामारी फैली जिसने कई लोगों को मार डाला। दाऊद अपने पाप से फिर गया और पश्चाताप किया। उसने परमेश्वर पर भरोसा किया कि वह उसके पापों के बावजूद भी उस पर दया करेंगे। उसने एक वेदी बनाकर और जानवरों को बलि देकर ऐसा किया। तब परमेश्वर ने महामारी रोक दी और उसके बदले आशीर्वाद भेजा। बाद में, उस स्थान पर मंदिर बनाया गया जहाँ दाऊद ने वह वेदी बनाई थी।